P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारत में उच्च शिक्षा व्यवस्था : गुणात्मक विकास एवं चुनौतियाँ और पंडित मदनमोहन मालवीय के शिक्षा पर विचार

नवीन जैन
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय
विश्वविद्यालय,
महेन्द्रगढ, हरियाणा, भारत

सारिका शर्मा
विभागाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय
विश्वविद्यालय,
महेन्द्रगढ, हरियाणा, भारत

सारांश

आधुनिक उच्च शिक्षा के इस युग में भारत जिस गति से उच्च शिक्षा के गुणात्मक विकास के साथ आधुनिकीकरण के दौर से गुज रहा है। वह किसी से छिपा नहीं है। आधुनिक शिक्षण उपकरण व तकनीक शिक्षा व्यवस्था से शिक्षक लगातार उच्च शिक्षा व्यवस्था से आगे बढ़ रहे है। शहरी हो या ग्रमीण अब दोनों ही जगह पर शिक्षा की ज्योति जल रही है। भारतीय परिदृश्य में शिक्षा और शिक्षा योजनाओं व कार्यक्रमों की क्रियान्विति की जा रही है। अब भारत में उच्च शिक्षा को अमूर्त से मूर्त रूप में पाठ्यक्रमों के साथ जोड़ा जा रहा है। इसके लिए कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन एवं अध्ययन के साथ राष्ट्रीय स्तर पर काम किया जा रहा है। यह उच्च शिक्षा व्यवस्था के सकारात्मक विकास व आधुनिक भारतीय शिक्षा की बहुमूखी तथा गुणात्मक दौर की शुरूआत है। कुछ चुनौतियां भी है जिसे लगातार शिक्षा के नवीन योजनाओं और कार्यक्रमों से दूर किया जा रहा है, जो निश्चित रूप से उच्च शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिए सार्थक परिणामों को जन्म देने जा रहे है। इसके साथ–साथ भारतीय महापुरूषों के शिक्षा पर दिए गए विचारों को भी हम सभी को ग्रहण करना होगा और समझना होगा ताकी नैतिक सुधार किया जा सके।

महामना मदनमोहन मालवीय इस राष्ट्र की प्रतिमूत्ति थे, हिमालय सी वेशभूषा, सागर सा विराट हृदय, चन्दन सा मन, नदियों के समान शिक्षा पर पवित्र विचार रखने वाले महान महापुरूष थे। स्वामी विवेकानन्द की तरह वे भी भारत को शिक्षा के बल पर एक सबल और सशक्त शिक्षित राष्ट्र के रूप में देखना और दिखाना चाहते थे। अपनी इस योजना की पूर्ति के लिए उन्होंने प्रयास भी किया और सम्पूर्ण जीवन भारतीय शिक्षा के सुधार में लगा दिया। उपरोक्त शोधपत्र मैंरे पी0एच0डी0 शोध विषय *''महामना पंड़ित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक चिंतन का एक समीक्षात्मक अध्ययन''* से संबधित है।

मुख्य शब्द : उच्च, शिक्षा व्यवस्था, गुणात्मक विकास, चुनौतियाँ, महामना।

प्रस्तावना

स्कूली शिक्षा और उसके मुकाबले उच्च शिक्षा के सापेक्ष महत्व के बारे में शिक्षाविदों के विचारों में विरोध है। लेकिन इस संबंध में यह व्यापक रूप से विश्वास किया जाता है कि किसी देश की उच्च शिक्षा की स्थिति को ही उसके भविष्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संकेत कहा जा सकता है। भारत के जाने माने शिक्षाविद् पंडित मदनमोहन मालवीय, जिन्होंने भारत के शिक्षा पर आधुनिकीकरण की नींव डाली थी, यह घोषणा की थी कि यदि विश्वविद्यालय ठीक होंगे तो राष्ट्र भी ठीक होगा। लेकिन इसके बावजूद कि उच्च शिक्षा को मुख्य भूमिका प्रदान की गई, इस क्षेत्र में बहुत ही कम प्रगति हुई है। हालांकि विश्वविद्यालयों के कुछ कालेजों तथा संकायों ने अनुसंधान करके और विद्वान पुरूषों तथा महिलाओं की सहायता से उक्त विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को समर्थन देने में निर्णायक भूमिका निभाई है, फिर भी विश्वविद्यालयों तथा कालेजों की सामान्य स्थिति राष्ट्र के लिए भारी चिता का विषय है।

जहां तक संस्थाओं की संख्या का प्रश्न है, हमारे देश में उच्च शिक्षा का एक विशाल तंत्र विद्यमान है। लेकिन इसका एकमात्र कारण हमारे देश की विशाल जनसंख्या है। संबंधित आयुवर्ग के कुछ प्रतिशत छात्र ही उच्च शिक्षा में नामांकित हो बाते है। कुछ क्षेत्रों में तो दाखिला छात्रों विशेषतः महिलाओं, अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जन जातियों का अनुपात और भी कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का विस्तार आंशिक रूप से ही पाया है। इसके अलावा, सामान्य शिक्षा के विषय में तो नामांकन का पैटर्न एकदम विषम है।

विभिन्न स्तरों पर विज्ञान, शिल्पविज्ञान और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहन देने से संबंधित प्रयासों में अधिक सफलता नहीं मिल पायी है।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय को इस देश ने एक महान् शिक्षाविद्, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, विधानकर्ता, सांसद, समाजसेवी, मानवतावादी, धर्म प्रवक्ता, हिन्दू धर्मकर्मों के श्रेष्ठता प्राधिकारी, भारतीयता के मूर्तरूप एवं भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ, हिन्दी भाषा साहित्य के उन्नायक, चिन्तक पत्रकार, विधिवेत्ता, प्रभावशाली अधिवक्ता, ओजस्वी वाग्मी, आदर्श अध्यापक, शिक्षा जगत के महान कुलपति और सर्वोपरि एक युग द्रष्टा ऋषि एवं समन्यवादी विचारक के रूप में देखा है। सदियों के भयानक शोषण एवं गुलामी से जर्जर बन चुकी भारत की काया में नयी चेतना एवं ऊर्जा का संचार कर उसे सभ्य संसार में पुनः साहस शौर्य एवं स्वाभिमान के साथ सिर उठाकर जीने योग्य बनाने में महामना मालवीय ने अपने जीवन में असीम त्याग एवं अटूट देश भक्ति के कितने अद्वितीय मिशाल छोड़े है, यह अवर्णनीय है। महामना मालवीय का व्यक्तित्व बहुआयामी था, उनके कार्य बहुरूप एवं देशव्यापी थे।

अध्ययन का उद्देश्य

1. वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप पर प्रकाश डालना।
2. भारत के गुणात्मक उच्च शिक्षा पर प्रकाश डालना।
3. भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था के चुनौतियों पर प्रकाश डालना।
4. धर्म व नैतिकता को शिक्षा का आवश्यक अंग मानकर युवकों के चरित्र का निर्माण करना।
5. वैज्ञानिक, टैक्निकल और प्रोफेशनल हुनर का विकास करना, जिसके साथ उचित व्यवहारिक ट्रेनिंग हो तथा जिससे उद्योगों को विकास में सहायता मिले और देश के भौतिक साधनों की उन्नति हो।

लोगों का आम विचार यह है कि उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति मुख्यतः बाहरी एजेंसियों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप का परिणाम है। यह कहा गया है कि विश्वविद्यालयों को सही रूप में स्वायत्त एवं उत्तरदायी होना चाहिए। एक ओर वह बात जोर देकर कही जाती है कि वर्तमान वातावरण में दायित्व थोपा नहीं जा सकता क्योंकि किसी राज्य द्वारा प्रायोजित संस्था शुरू से ऐसी प्रक्रिया अपनाती है जिसे पलटा नहीं जा सकता। एक बार शुरू होने पर किसी भी संस्था या यहां तक कि पाठ्यक्रम को भी बदला नहीं जा सकता। एक दूसरे कारण से भी उत्तरदायित्व मात्र एक संकल्पना बनी रहेगी क्योंकि व्यावहारकि रूप में उसका निर्वाह नहीं किया जाएगा। औपचारिक रूप से विश्वविद्यालय, कुलपति के कार्यालय के आसपास बनाए जाते है। वह सभी समितियों और परिषदों का अध्यक्ष होता है। लेकिन असल में कुलपति डावांडोल परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता है। क्योंकि उसे विश्वविद्यालयों को चलाये रखने के लिए बार बार सरकारी अधिकारियों के पास जाना पड़ता है। दूसरी तरफ उसे उन संस्थाओं में, जिनके सदस्य विश्वविद्यालय के कार्य संचालन पर लिए गए निर्णय के प्रभाव के लिए जिम्मेदार नहीं होते, अपना मार्ग प्रशस्त करने के लिए कदम–कदम पर समझौता करना पड़ता है। कुलपति संबद्ध कालेज को भी आदेश नहीं दे सकता। क्योंकि कालेज भी बड़े जोश और शक्ति से अपनी स्वायत्ताता की रक्षा करते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर आज तक जिन कार्यक्रमों के कारण देश में नवीन परिवर्तन आया है और उसके उत्पादन में विविधीकरण एवं वृद्धि हुई है, वे मुख्यतः भारत की तकनीकी शिक्षा की संस्थाओं द्वारा सृजित जनशक्ति द्वारा सम्भव हो सके हैं। इन संस्थाओं के कुछ स्तनातक विदेश भी चले गए हैं और विश्व के अनेक भागों में टेक्नालोजी के प्रमुख क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। इन उपलब्धियों के बावजूद इस पद्धति की अनेक समस्याएं है। जिन पर तत्काल ध्यान दिया जाना चाहिए। पहली समस्या यह है कि नई टेक्नोलॉजी से संबंधित प्रशिक्षण देने के लिए तथा अनुसंधान की आवश्यकता पूरी करने के लिए पुरानी मशीनों के स्थान पर नई तकनीक की अत्याधुनिक मशीनें चाहिए। इसके लिए उपकरण एवं संसाधन उपलब्ध नहीं है। औद्योगिक सेक्टर में अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धा उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इसे जीवित रखने के लिए इसमें तत्काल परिवर्तन करना होगा।

उत्पादन शिक्षा को बढ़ाने के लिए प्रबंध शिक्षा भी बड़े महत्व का क्षेत्र है। श्रेष्ठ भारतीय प्रबंध संस्थानों के अतिरिक्त कई विश्वविद्यालयों में व्यापार प्रशासन के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की व्यवस्था है। कुछ ऐसी गैर–सरकारी संस्थाएं भी हैं जिनमें प्रबंध पाठ्यक्रमों की व्यवस्था है। इन पाठ्यक्रमों के स्तर और इनकी गुणवत्ता के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न विचार सुनने को मिलते है। भारी मांग को पूरा करने की जल्दी में, बहुत सारी संस्थाएं स्थापित हो गई है। जिनके पास उपयुक्त मानवीय और आर्थिक साधन नहीं है। पहले प्रबंध शिक्षा की प्रवृत्ति और वह भी कुछ चुने हुए क्षेत्रों की निजी निगमित क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति पर ही केन्द्रित रही है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, तकनीकी शिक्षा के संदर्भ में शिक्षा के वास्तविक खर्च को पूरा करने के लिए फीस बढ़ाने के संबंध में जो विचार प्रकट किए गए है, उन्हें प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में लागू करने में कही अधिक औचित्य प्रतीत होता है।

एक नई नीति के ढांचे में शिक्षा के पुनर्निर्माण के लिए अनेक तत्व निर्णायक होते है। इनमें से सबसे प्रमुख तत्व प्रेरणा है। अधिकांश लोग इस बात से सहमत है कि भूतकाल में किए गए कई अनुकूल योगदानों के बावजूद मौजूदा शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तनों की आवश्यकता है। इस शिक्षा व्यवस्था में गिरावट और इसकी अप्रासंगिकता सभी की चिन्ता और इस बात पर उनमें मतैक्या भी है। छुटपुट परिवर्तनों से इसमें सुधार नहीं हो सकता। मूल्यांकन और प्रबंध के अध्ययन और अध्यापन की व्यवस्थाओं की प्राथमिकताओं, विषय–वस्तु और कार्यप्रणाली में मौलिक सुधार करके इस व्यवस्था को नया रूप देना होगा।

यह भी महत्वपूर्ण बात है कि नई नीति पिछले कुछ वर्षों की यथेष्ट उपलब्धियों के बल पर बनाई जा रही है। भारत में पहले ही स्कूलों का जाल सा फैला हुआ है। कुल आबादी का लगभग 98 प्रतिशत, किसी न किसी

प्रथमिक स्कूल के एक किलोमीटर के दायरे में है और लगभग 90 प्रतिशत किसी न किसी मिडिल स्कूल के तीन किलोमीटर के दायरे में। अतः इस दिशा में नई पहल को बढ़ावा देने के लिए इसके पास शिक्षा और बौद्धिक विवेक से लैस पर्याप्त मानव शक्ति है। शिक्षा प्रणाली में व्यक्तियों और स्वैच्छिक दलों द्वारा की गई पहल के कारण अनेक नए विचार सामने आए हैं। यदि यह पता लगाया जा सके कि किस किस्म की पहल से समुचित सफलता की अधिक सम्भावना है, तो यह एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

उच्च शिक्षा के नये स्वरूप को अन्य कई तरह से भी हाल ही में पिछले दिनों उठाए गए कदमों से सहायता मिलेगी। उच्च शिक्षा नीति को नया रूप देने के लिए किए जाने वाले कार्यों में पूर्णतः कोई नया काम शामिल होना जरूरी नहीं है। शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय आयोग की रिपोर्टों और केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की कार्य प्रणाली देखने के लिए बनाई गई विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की समीक्षा समिति की रिपोर्ट से सहायता ली जा सकती है और ली भी गई है। कुछ और समितियां भी व्यावसायीकरण, डिग्रियों और नौकरियों के बीच अनिवार्य, संबंध को समाप्त करने, मानवशक्ति और शिक्षा के परस्पर संबंध के बारे में तथा कई अन्य समस्याओं पर विचार कर रही है। जिसके सिफारिशों को लागु करने के बाद निश्चित तौर पर हमारे भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक विकास देखा जा सकता है।

उच्च शिक्षा नीतियों के सभी प्रस्तावों के विरोध में जो आलोचनाएं की जाती है। उनमें से एक तो इस संकल्पना को लिए हुए है कि नीति बनाने पर तो काफी ध्यान दिया जाता है लेकिन उसको कार्यान्वित करने पर जो बल दिया जाता है उसमें काफी कमियां रह जाती है। यह आलोचना काफी हद तक अनुचित है। वास्तव में चूक इस तथ्य के कारण होती है कि नीति निर्धारण के समय न तो प्रणाली की आंतरिक और बाहरी सीमाओं को ध्यान में रखा जाता है और नही साधानों, संस्थागत और प्रबंध प्रणाली में परिवर्तनों, आधारभूत ढांचों और विस्तृत तथा गहन संबंधों की पर्वापक्षाओं का साफ–साफ वर्णन किया जाता है। उच्च शिक्षा के लिए विचार–विमर्श वास्तवकिता के माहौल में हो। जिससे आने वाले उच्च शिक्षा के गुणात्मक विकास को बल मिल सकें।

भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था के चुनौतीयों में शिक्षक को राजनीति से अलग रखना एक लोकप्रिय विचार है यदि यह परित हो जाए तो अनेक राजनैतिक दलों का कैडर समाप्त हो जाएगा और उन्हें यह मालूम नहीं हो पाएगा कि वे चुनाव लड़ने और प्रदर्शनों, विरोध प्रदर्शनों तथा जलूस में शामिल हाने के लिए अपेक्षित आदमी कहां से पाएंगे। शैक्षिक और गैर शैक्षिक स्टाफ के कई लोग आंदोलन की राजनीति से उन्नति पाने के बजाय अपने पेशे में आगे बढ़ने के लिए, सौंपे गए कार्यों से जूझते पाए जाएंगे।

महामना मालवीय भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक थे, परन्तु वे रूढ़िवादी नहीं थे। उन्होंने विश्वविद्यालय में प्राचीन और नवीन विचारधाराओं और वैज्ञानिक शिक्षा का एक ऐसा समन्वय स्थापित किया, जिससे भारत के नवयुवक राष्ट्रनिर्माण के कार्यों में सफलतापूर्वक योगदान कर सकते है।

निष्कर्ष

अतः वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि अगर नौकरी से डिग्री को न जोड़ा जाए तो स्नातक स्तर पर ही भीड़ कर हो जाएगी और इससे काफी राहत मिलेगी। यदि युवक–युवतियों को प्रशिक्षण के बाद रोजगार देने वालों के सहयोग से बड़ी संख्या में रोजगार के उचित प्रबंध किया जाए तो निश्चित तौर पर हर हालत में उच्च शिक्षा व्यवस्था की दूरगामी शिक्षण पद्धति से छात्रों को मदद मिलेगी और उत्साह बढ़ेगा। वहीं दूसरी तरफ भारतीय गुणात्मक शिक्षा व्यवस्था की बात करे तो हम पाते है कि अब हमारे भारत में उच्च शिक्षा के कई श्रेष्ठ शिक्षण संस्थाएं एवं विश्वविद्यालयों का एक आधुनिकरण हुआ है। जिसके कारण उच्च शिक्षा में कई क्षेत्रों में भारत ने बहुत से आयाम स्थापित किए है। जबकी भारतीय उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ वर्तमान में अभी भी है और इन चुनौतियों को शिक्षा की नई नई योजनाओं व नीतियों द्वारा इसे दूर किया जा रहा है और इसके कार्यान्वयन के लिए दिशा निर्देश भारत सरकार के द्वारा जारी किए जा रहे है।

महामना मालवीय शिक्षा पर सबसे आदर्श विचार यही था कि हिन्दुओं और सामन्यतः समस्त विश्व के लाभार्थ हिन्दू शास्त्रों व संस्कृति के इतिहास की रक्षा व प्रचार के लिए उनका अध्ययन और हिन्दुओं के उत्तम विचार तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के समस्त उत्तम गुणों का विकास करना था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

ए. आर. किदवई, 'उच्च शिक्षा में नई दिशायें', नेशनल लक्ष्मी पब्लिकेशन, दिल्ली।

ए. आर. देसाई, 'भारत का विकास मार्ग' हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

ए. एस. राव और पी. टारो, 'उच्च शिक्षा के विचार' कालपेज प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015.

रामनारायण व्यास, शिक्षा दर्शन विवेचन और सामंजस्य, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

एम. दास, भारत में शिक्षा, एंटलाटिंक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2004,

रजंनी जोशी, 'भारत में शिक्षा', एंटलाटिंक प्रकाशन, 2006.

आर. एन. शर्मा और आर. के. शर्मा, 'भारतीय में शिक्षा की समस्याएं', एंटलाटिंक प्रकाशन, 2006.

ईश्वर प्रसाद वर्मा, 'मालवीय जी के सपनों का भारत' प्रमोद साहित्य सदन, दिल्ली 1967

महामना त्रेमासिक पत्रिका, भाग–1, प्रवेशांक मार्च 1993, महामना फाउण्डेशन, वाराणसी।

Dr. S.K. Maini, Dr. Vishwanath Pandey, K. Chandramouli 'Visionary of Modern India Madan Mohan Malaviya' Showcase, Roli Books. 2018